कभी तो.....प्रिय

न चाह कि चॉद तारे तोड़ कर लाओ
न ही रूपया पैसा और सोना चॉदी
बस, खाली हाथ आना साथ मुस्कान ले आना
काश! कभी तो खुश करने लिए दो शब्दों को
यूँ ही बिना वजह सहजता से बोल दिया करो।

न चाहा कि सिर्फ मुझसे ही प्यार करो
बस एक नजर प्यार से देख लिया करो
कहॉ गुम हुआ है, वह मनोभाव व खुशनुम्हा यादें
तलाश प्रकिया तहत, आत्मचिन्तन से ढूंढ लिया करो
कभी तो "दिये नाम" से सरलता से पुकार लिया करो

न चाहा कभी की हाथ बटाओ काम में मेरा बस!
कितना करती हूँ, सबके लिए बस देख लिया करो
निस्वार्थ भावनाओं को निरपेक्ष नजरिये से समझ कर
कभी तो हवन में साथ आहूँती दे दिया करो ।

न चाह कि की कदम से कदम ही मिलाओ
बस दो कदम बेखौफ बिन्दास चल दिया करो
कहॉ धूमिल हो गये वो वादें, साथ चलने की कसमें
जिन्दगी का सफर खुशियॉ पाते, यूँ ही गुजर जाएगा

बस, कभी तो पीछे मुँड़ कर देख लिया करो
याद करके हर एक वादा दोबारा दर्ज कर लिया करो।
न चाहा कभी कि यूँ ही भावना में बह जाया करो
बस हर छोटी बड़ी खुशियों की वजह को उचित मानकर
कभी तो साक्षी हो कर भावनाओं को समझ लिया करो।

न चाह कभी कि सब सपने व हर इच्छाओं पूरी करो
बस मौजूदगी का अहसास को महसूस कर लिया करो
कभी तो कमीओं को भूलकर अच्छाईयॉ याद किया करो
इतने लम्बें साथ को यूँ ही अनदेखा न किया करो
कभी तो रिश्ते की गरिमा, उसकी पहचान को मोल दिया करो।

समझो तो खोला है यह शिकायतों का पिटारा तुम्हारे लिए!
दिल व ईमानदारी से निभाया हुआ रिश्ता आत्मा में है जो बसा
प्यार व स्नेह से सींचा गया यह साथ और हमारा अटूट बन्धन
कैसे तुम अनदेखा कर एक अच्छे जीवन के सुखद क्षणों संग्रह को,
हवॉ में उड़ा कर दॉव के कगार पर आना देख सकते हो.....?

बस अब तो सिर्फ स्वास्थ्य व तन से प्यार व दोस्ती निभाना ही है,
काया सुख ही परम है, और मुझें दुश्मन नहीं अपना दोस्त ही मानो ।

गीतान्जलि सक्सेना सितम्बर 2020